छुटकारा क्रियान्वित हुआ

प्रेरितों के काम की पुस्तक बहुत सी विस्मयकारी भविष्यवाणियों का उत्तर देती है। यदि बाइबल से यह पुस्तक निकाल दी जाती, तो पुराने नियम का कोई अर्थ न रहता क्योंकि बहुत सी प्रारम्भिक भविष्यवाणियां अपरिचित और पूरा हुए बिना रह जातीं! नया नियम बना लेने पर भी ऐसा ही होता, क्योंकि प्रेरितों के काम में होने वाली घटनाओं की जानकारी के बिना प्रेरितों के काम के आगे की शिक्षाओं का कोई अर्थ न रहता।

छुटकारे के लिए परमेश्वर की शानदार योजना प्रेरितों के काम पर केन्द्रित है। इस पुस्तक के पहले की हर बात इसमें घटने वाली घटनाओं की ओर आगे को संकेत करती है; इस पुस्तक के बाद की हर बात उन घटनाओं को पक्का करती है जो प्रेरितों के काम में दर्ज हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक का सार निकालने पर सारी बाइबल में अत्यावश्यकता, सम्पूर्णता और एकता का बोध होता है। इस पुस्तक के बिना उलझन में डालने वाली एक कमी रह जाती।

प्रेरितों के काम एक आरम्भ के रूप में

पुराने नियम की पुस्तक उत्पत्ति की तरह ही प्रेरितों के काम भी आरम्भ की पुस्तक है। वास्तव में, प्रेरितों 2 की घटनाओं के लगभग दस वर्ष बाद, पतरस ने उन घटनाओं को ''आरम्भ'' (प्रेरितों 11:15) कहा था। यद्यपि नया नियम यीशु के जीवन के वृत्तांतों के चार जीवन चरित्रों से आरम्भ होता है, बाइबल के गम्भीर छात्रों के लिए उन विस्मयकारी आरम्भों को समझना सही व उचित है जो प्रेरितों के काम में हुए। (यीशु के जीवन की घटनाएं, उसके क्रूसारोहण तक, वास्तव में मूसा की व्यवस्था के अधीन घटीं और इसलिए वे पुराने नियम के समयों का एक भाग थीं।)

पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2) की घटनाओं में भरपूरी के साथ सुसमाचार के प्रचार का आरम्भ शामिल है। विश्वासियों को यीशु के अधिकार से उसे मसीह मानकर, ''यीशु मसीह के नाम से'' (प्रेरितों 2:38) मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया। यह कलीसिया का आरम्भिक समय था, जो मसीह के साथ विशेष रूप से जुड़े लोगों की बुलाई हुई देह है। यह वह समय था जब परमेश्वर के मन्दिर के रूप में (1 कुरिन्थियों 3:16) कलीसिया को जीवन देने के लिए और प्रेरितों को अपने काम में जोश दिलाने के लिए सहायक के रूप में भेजे गए पवित्र आत्मा ने विशेष रूप से अपना काम आरम्भ

किया। यह दिन सुसमाचार के विश्वव्यापी प्रचार के आरम्भ का दिन था, क्योंकि इस प्रकार की संगति का भाग बनने और सभी लोगों को समझाने के लिए परमेश्वर के लोग कभी भी इस प्रकार सक्रिय नहीं हुए थे। नये नियम में प्रेरितों के काम का उतना ही महत्व है जितना पुराने नियम में उत्पत्ति की पुस्तक का।

प्रेरितों के काम में ''दो'' लोगों के तात्कालिक और प्रभावशाली उपयोग को दिखाया गया है। पुस्तक के अपने आप में दो मुख्य भाग हैं: अध्याय 1 से 12 और अध्याय 13 से 28. दो श्रेष्ठ पुरुषों अर्थात पतरस और पौलुस ने सुसमाचार के प्रचार की घटनाओं को अगुआई दी। सुसमाचार प्रचार की घटनाएं दो प्रमुख नगरों यरूशलेम तथा सीरिया के अन्ताकिया में हुईं। दो बड़ी धार्मिक पद्धतियों, यहूदी धर्म और मसीहियत को इतिहास के पन्नों में दिखाया गया है जिसमें यीशु ने मूसा की व्यवस्था को पूरा करके ''स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था'' को लागू किया (लूका 24:44, 45; याकूब 1:25)। मसीह में परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य को समझने के लिए इन दो पद्धतियों और एक-दूसरे के साथ इनके सम्बन्धों को समझना जरूरी है।

प्रेरितों के काम
भविष्यवाणी के पूरा होने के रूप में

आदम और हव्वा की उपस्थिति में परमेश्वर ने शैतान को बताया था कि स्त्री का अंश सर्प के सिर को कुचलेगा (उत्पत्ति 3:15)। यह भविष्यवाणी हज़ारों वर्षों बाद पूरी हुई, जब यीशु को अभिषिक्त राजा अर्थात ''मसीह'' बनाया गया (प्रेरितों 2:36)। पतरस ने प्रेरितों 2:32, 36 में प्रचार किया कि यीशु इसलिए मसीह बन सका क्योंकि वह मुर्दों में से जी उठा था, इसलिए, वह परमेश्वर का पुत्र प्रमाणित हो चुका है (रोमियों 1:4)। उसके जी उठने के कारण, उसके पीछे चलने वाले सभी लोगों की विजय होगी (1 कुरिन्थियों 15:57)। इस पृथ्वी पर आने, शिक्षा देने के लिए रहने, उद्धार के लिए मरने और राज्य करने के लिए जी उठने के बाद, यीशु ''बन्धुवाई को बान्ध ले गया'' (इफिसियों 4:8)। उसने ''शैतान के कामों को नाश'' किया (1 यूहन्ना 3:8)। उसने सर्प के सिर को कुचल दिया!

मूसा ने प्रतिज्ञा की थी कि परमेश्वर उसके जैसा एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा, जिसकी हर एक को सुननी चाहिए (व्यवस्थाविवरण 18:15-19)। प्रेरितों 3:18-24 में, पतरस ने प्रचार किया कि यह भविष्यवक्ता यीशु ही था।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि उद्धारकर्त्ता राजा दाऊद के वंश से आएगा (2 शमूएल 7:12, 13), और पतरस ने प्रचार किया कि यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब यीशु मुर्दों में से जी उठा (प्रेरितों 2:30-32)। दाऊद को यह लिपिबद्ध करवाया गया था कि यह मसीह ''तेरे पुत्रों में से'' होगा (1 इतिहास 17:11, 12), और पतरस के प्रवचन में यह तथ्य शामिल था (प्रेरितों 2:30)।

यशायाह ने ''अन्त के दिनों'' की उत्तमता की बात की, जब उद्धार सब मनुष्यों के लिए आएगा (यशायाह 2:1-4)। योएल ने लिखा कि इन ''अन्त के दिनों'' में परमेश्वर

के लोगों पर आत्मा विशेष रीति से आएगा (योएल 2:28)। दानिय्येल 2:44 में, राजा नबूकदनेस्सर के उस विशाल मूर्ति के स्वप्न का अर्थ बताते हुए, दानिय्येल ने कहा कि ''उन राजाओं के दिनों में'' अर्थात जो राजा उस मूर्ति के स्वप्न से बताए गए थे, परमेश्वर का राज्य आरम्भ होगा।[1] यह राज्य सभी राज्यों से शक्तिशाली होगा और सदा तक रहेगा (दानिय्येल 2:44)। पिन्तेकुस्त के दिन, प्रेरितों 2 की घटनाओं ने, इन सभी भविष्यवाणियों को पूर्णता दे दी।[2]

आमोस ने ''दाऊद की झोंपड़ी'' फिर से बनाने की बात की और कहा कि एक समय आएगा जब सब जातियों के लोग परमेश्वर की संगति का भाग होंगे (आमोस 9:11, 12)। यह भविष्यवाणी दाऊद के द्वारा परमेश्वर के धर्मतन्त्र और स्वीकार योग्य उस आराधना की बात करती थी जो भविष्यवाणी की इस ''झोंपड़ी'' में परमेश्वर के लोगों के साथ होगी। याकूब ने कहा कि ये प्रतिज्ञाएं मसीह के सुसमाचार में पूरी हो गई थीं (प्रेरितों 15:15-18)।

यीशु ने अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा की और कहा कि अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न आएंगे (मत्ती 16:18)। प्रेरितों के काम के बिना, हमें कभी पता नहीं चल पाता कि कलीसिया सफलतापूर्वक किस प्रकार आरम्भ हुई (प्रेरितों 2)। उद्धार पाने वाले लोग परमेश्वर के साथ सहभागिता में मिलाए जाते थे (प्रेरितों 2:41, 47), और उन्हें बुलाए हुए लोग अर्थात कलीसिया कहा जाने लगा (प्रेरितों 5:11)।

यीशु ने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि उसका राज्य सामर्थ के साथ आएगा (मरकुस 9:1)। और यह कि यह सामर्थ पवित्र आत्मा के आने से दी जाएगी (प्रेरितों 1:8)। वह सामर्थ पिन्तेकुस्त के दिन आई, जब पवित्र आत्मा प्रेरितों पर उतरा (प्रेरितों 2:1-4)। इसलिए मसीह का राज्य आ चुका होना चाहिए; यह पृथ्वी पर स्थापित हुआ या सक्रिय होना चाहिए।

प्रेरितों को छोड़ने के बाद, यीशु ने पवित्र आत्मा को सहायक के रूप में भेजने का वायदा किया (यूहन्ना 16:7-13)। वायदे के अनुसार पवित्र आत्मा प्रेरितों पर उतरा भी था (प्रेरितों 2:1-4)।

सारांश

प्रेरितों के काम छुटकारे की परमेश्वर की शानदार योजना को समझने की मुख्य कुंजी है, जिसमें अनुग्रह का सुसमाचार कार्यरूप लेता है। प्रेरितों के काम से भविष्यवाणियों के बादल छंट जाते हैं और उन भविष्यवाणियों के भी जो पिन्तेकुस्त के महान दिन से पहले हुई थीं। इस पुस्तक के बिना, हम यह पूरी तरह नहीं समझ सकते थे कि यीशु ''परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु है'' (1 तीमुथियुस 6:15)।

प्रेरितों के काम ''पहिये का धुरा'' है जिसके इर्द-गिर्द बाइबल की सभी अन्य पुस्तकें घूमती हैं। इस पुस्तक में पाई जाने वाली महान सच्चाइयों को समझना आवश्यक है! नहीं तो हम इस भ्रम में फंस सकते हैं कि यह मनुष्यों ने ही बनाई है। नये नियम की कलीसिया

के इतिहास की इस एकमात्र पुस्तक की सादगी को समझने में असफल रहना शायद सभी सम्प्रदायों की सबसे बड़ी असफलता है। यदि वे केवल इस पुस्तक को ही समझ जाते तो वे समझ सकते थे कि साम्प्रदायिक कलीसियाएं पाप के लिए परमेश्वर का उत्तर नहीं हैं।

इस पुस्तक में परमेश्वर हमें बताता है कि उसने पाप की ख़बर लेने के लिए क्या योजना बनाई है। इसका समाधान मसीह की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया में ही मिलता है, अर्थात जिसके अनन्तकाल तक उद्धार का मसीह ने वायदा किया था (इफिसियों 1:22, 23; 5:23)। वह कलीसिया कोई सम्प्रदाय नहीं है और न ही कोई साम्प्रदायिक कलीसियाएं हैं। सभी साम्प्रदायिक कलीसियाएं मानवीय खोजों का परिणाम हैं; प्रभु की कलीसिया मसीह में परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य का परिणाम है (इफिसियों 3:11)। किसी भी साम्प्रदायिक कलीसिया के आरम्भ से पूर्व, पहली शताब्दी में हज़ारों की संख्या में लोगों का उद्धार हुआ और वे स्वर्ग में जा सके। उसी उद्धार का आनन्द आज भी वे लोग ले सकते हैं जो विश्वास करके, आज्ञा मानते, और वैसे ही जीवन बिताते हैं जैसे प्रेरितों के काम में मसीहियों के लिए वर्णित है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक आत्मा की प्रेरणा से लिखी बाइबल की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु यह सभी छियासठ पुस्तकों को समझने की कुंजी है। निश्चय ही प्रेरितों के काम भविष्यवाणी का उत्तर है।

पाद टिप्पणियां

[1]नबूकदनेस्सर के स्वप्न में चार सांसारिक राज्यों को दिखाया गया था। उसके स्वप्न की विशाल मूर्ति का सिर सोने का, भुजाएं और छाती चान्दी की, पेट और जांघें पीतल की, टांगें लोहे की, और पांव मिट्टी के थे। बाबुल के बाद, तीन और शक्तिशाली राज्य उठे। इसलिए, बाबुल को सोने, मादा फारस साम्राज्य को चान्दी, यूनानी साम्राज्य को पीतल, और रोमी साम्राज्य को लोहे, का बताया गया। लोहे और मिट्टी के पांव चौथे राज्य के थे, भिन्न-भिन्न राज्यों के नहीं। दानिय्येल 2:34 का पत्थर उस मूर्ति के विरुद्ध आया और उसने इसके लोहे से मिली मिट्टी के पांवों पर ठोकर मारकर, मूर्ति को पूरी तरह से चूर-चूर कर दिया। यह पत्थर जो मनुष्य के हाथों से नहीं बना था, बढ़ता गया और बहुत बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया (दानिय्येल 2:35)। [2]इन भविष्यवाणियों में पूरी हुई कुछ मुख्य धारणाएं हमें उन निश्चित शिक्षाओं को सही-सही समझने में सहायता करती हैं जिन्हें मसीह के नाम से सिखाए जाने की आवश्यकता है। ''अन्त के दिनों में'' (यशायाह 2:2; प्रेरितों 2:17) ''उन राजाओं के दिनों'' का समानार्थक है (दानिय्येल 2:44)। ''यहोवा के भवन का पर्वत'' (यशायाह 2:2) का इस्तेमाल उसी अर्थ में हुआ जिसमें ''राज्य'' (दानिय्येल 7:13, 14), ''दाऊद का सिंहासन'' (प्रेरितों 2:30) या ''दाऊद की झोंपड़ी'' (आमोस 9:11) का। उद्धार की आशीषें ''हर जाति'' (यशायाह 2:2) और ''बहुत देशों'' के लोगों (यशायाह 2:3) के लिए थीं। ''सियोन'' (योएल 2:32) वह जगह थी जहां से यह सभी शानदार घटनाएं आरम्भ होनी थीं। ''सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा'' (यशायाह 2:2) और ''यरूशलेम'' (लूका 24:47) एक ही भोगौलिक स्थान के लिए प्रयुक्त किए गए थे।